भारतीय ज्ञान परंपरा व शोध

डॉ॰ मुकेश जैन
पद – सहायक आचार्य (संस्कृत)
पदस्थापन – राजकीय महाविद्यालय बाड़मेर (राजस्थान
मोबाइल नंबर – 8003959741
ई-मेल – mukesh.lalitjain@gmail.com

सारांश- प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों में आस्था को पुनर्जीवित करना है तथा इसके लिए आवश्यक है कि हम भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग रहे प्राचीन मूल्यों, जैसे -पंच महायज्ञ ,सोलह संस्कार, तीन ऋण, भारतीय आयुर्वेद पद्धति, सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहन देने वाली प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, वेदों ,उपनिषदों, पुराणों में निहित व्यावहारिक ज्ञान की अथाह सामग्री, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को सम्यक् आकार देने वाली अष्टांग योग पद्धति, प्रकृति के प्रति भारतीय ग्रंथों में अद्भुत पोषण का दृष्टिकोण आदि के प्रति श्रद्धा व वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल शोध का दृष्टिकोण विकसित करना है ताकि हम शारीरिक ,मानसिक व नैतिक दृष्टिकोण से सम्मुनत होकर पुनः विश्व गुरु के रूप में स्वयं को प्रतिस्थापित कर सके।

आलेख -शोध या अनुसंधान किसी भी राष्ट्र या संस्कृति के विकास तथा उसकी समृद्धि में नितांत आवश्यक है | शोध का अर्थ केवल रसायन विज्ञान , भौतिक विज्ञान आदि के तथ्यों का अन्वेषण व प्रमाणीकरण नहीं है, अपितु वर्तमान में 'सामाजिक अनुसंधान' शोध का बड़ा विस्तृत विषय बन चुका है क्योंकि सामाजिक क्षेत्र में किया गया शोध व्यक्ति , समाज व राष्ट्र के उत्थान में सहायक होता है | 'भारतीय ज्ञान परंपरा एवं शोध' भी शोध के सामाजिक पक्ष से सम्बंधित है |

सामाजिक अनुसंधान का प्रथम कारण सामाजिक यथार्थ को समझना होता है , अतः इसका प्रमुख उद्देश्य सामाजिक यथार्थ को यथासंभव अधिक से अधिक क्रमबद्ध एवं विषयात्मक रूप से विवेचित करना , इसे वांछित दिशा में मोड़ने के लिए इसे ज्ञान के क्षेत्र में लागू करने योग्य बनाना तथा इस ज्ञान से समाज को लाभान्वित करने हेतु विशिष्ट सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इसमें आवश्यक संशोधन कर कार्यरूप में परिणत करना है | इन्हीं उद्देश्यों द्वारा सामाजिक अनुसंधान विशुद्ध(pure), व्यावहारिक(applied) तथा क्रियाशोध(action research) के विभिन्न स्वरूप ग्रहण करता है |[1] इस प्रकार के सामाजिक शोध हमारे जीवन में बहुपयोगी साबित होते हैं | इस उपयोगिता को अग्रलिखित बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है –

1 अज्ञानता का नाश 2 समाजकल्याण में सहायक 3 सामाजिक प्रगति में सहायक 4 सामाजिक नियंत्रण में सहायक 5 सामाजिक विज्ञानों की उन्नति में सहायक 6 सैद्धांतिक उपयोगिता I[2] हमारे प्राचीन अथाह ज्ञान सागर की उपेक्षा देख कर तथा पश्चिम के अन्धानुकरण को देखने पर एक हिंदी की कहावत तो प्रासंगिक प्रतीत होती है – 'घर का जोगी जोगना आन गांव का सिद्ध |'

भारत को सदैव 'विश्वगुरु' का दर्जा दिया गया है | हमें यदि यह अप्रतिम अलंकरण प्राप्त है तो निःसंदेह हमारी आधुनिक उपलब्धियों के कारण नहीं अपितु हमारी प्राचीन उन्नत, गौरवशाली संस्कृति तथा विज्ञान के कारण है | किसी भी श्रेष्ठ प्राचीन तथ्यों को प्राचीन व अप्रासंगिक कहकर उनका उपहास करना नहीं चाहिए, अपितु नूतन समय में वे तार्किक अनुपम तथ्य हमारे लिए किस प्रकार प्रासंगिक व कल्याणकारी हो सकते हैं , यह शोध का एक अत्युत्तम विषय है |

जिस प्रकार शोध का एक अर्थ 'री-सर्च' अर्थात् पुनः खोज है , उसी प्रकार हमें भी नाम्ना जीवित हमारे प्राचीन संस्कारों व संस्कृति को पुनर्जीवित करके यथार्थ में जीवन में समाविष्ट करना होगा | देखिये पञ्च महायज्ञों का कितना सुन्दर चित्रण इस श्लोक के माध्यम से किया गया है -

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञ पितृयज्ञस्तू तर्पणं I

होमो देवो बलिर्भूतो नृयज्ञो अतिथिपूजनम II[3]

'भारत' शब्द दो शब्दों 'भा+रत' से मिलकर बना है | 'भा' का शाब्दिक अर्थ 'प्रकाश' तथा 'रत' का अर्थ 'संलग्न' है | अतः जो सदैव ज्ञान के प्रकाश से आलोकित या ज्ञान की रोशनी से चमत्कृत है , वही भारत है | हमारे प्राचीन संस्कार हमें धरती को माता मानकर उसका शोषण नहीं अपितु पोषण करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं -

माता भूमि: पुत्रोऽहम् पृथिव्या:I[4]

आज जब सम्पूर्ण विश्व 'कोरोना' जैसी अनसुलझी विकराल त्रासदी से त्रस्त रहा, तब भारत सहित सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति की उपादेयता को जाना तथा समझा गया है कि किस प्रकार हमारा प्राचीन ज्ञान तथा संस्कार का ढांचा ही कुछ इस तरह का है कि इस प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न ही न हो | भारतीय संस्कृति प्रारंभ से ही हाथ मिलाने की जगह हाथ जोड़कर अभिवादन करती रही है | **हाल ही में इजरायल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू , प्रिंस चार्ल्स , फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रे की तस्वीर आई थी जिसमे वे नमस्ते करते हुए दिखाई दे रहे थे** |[5]

आयुर्वेद – चरक द्वारा लिखित चरक संहिता , सुश्रुत की सुश्रुत संहिता तथा वाग्भट्ट द्वारा लिखित अष्टांग हृदय को **आयुर्वेद त्रयी ग्रन्थ** कहा जाता है | पिछले कुछ समय से लोगों ने आयुर्वेद का महत्व पुनः स्वीकार किया है तथा आश्चर्यजनक रूप से आयुर्वेद द्वारा कई उन रोगों की सफलतापूर्वक चिकित्सा की गयी , जिसे अत्याधुनिक एलोपेथिक चिकित्सा भी ठीक न कर सकी | आयुर्वेद की परिभाषा देते हुए कहा गया है – "**हिताहितं सुखंदुखंमायुस्तस्य हिताहितं मानं च तच्च यदोक्तमायुर्वेद स उच्यते** |"[6] अर्थात् आयु के हित तथा अहित के लिए , उसके सुख-दुःख का वर्णन मान(उचित मात्रा) सहित जहाँ हो उसे आयुर्वेद कहते हैं | इसी प्रकार स्वास्थ्य की समग्र परिभाषा एक छोटे से श्लोक में समाहित है –

"समदोष: समग्निश्च समधातुमलक्रिया:| प्रसन्नात्मेन्द्रियमन: मन: स्वस्थ इत्यभिधीयते ||"[7]

अर्थात् जिस व्यक्ति में दोष (वात, पित्त, कफ) सम हो , अग्नि सम हो , सात धातुएं (रक्त, मांस, भेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र) सम हो , जिसके मल, मूत्र, स्वेद, ठीक से निकल रहे हो , जिसकी आत्मा, इन्द्रिय, मन प्रसन्न हो तथा कोई मानसिक तनाव न हो उसे स्वस्थ कहते हैं | इस आयुर्वेद शास्त्र का प्रयोजन – **"प्रयोजनं यास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणामातुरस्य विकारप्रशमनं च |"** अर्थात् स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा तथा रोगी के रोग को दूर करना है | आयुर्वेद पद्धति भले ही प्राचीन है किन्तु इसका प्रयोग नवीन रोगों के उपचार में भी प्रभावी रूप से किया जा रहा है | एलोपेथी व आयुर्वेद दोनों के समन्वय से भी कई रोगों का कारगर उपचार संभव है | आने वाले समय में यह शोध का बहुत बड़ा विषय होगा | वर्तमान में भी कोरोना संक्रमण का इलाज एलोपैथ से व इम्युनिटी बढ़ाने के लिए आयुर्वेदिक काढ़े आदि का प्रयोग किया जा रहा है |[8] केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने भी दिव्य मुलेठी, अश्वगंधा, पीप्पली व गिलोय के ट्रायल का फैसला किया है | इस प्रकार नवीन उभरते रोगों में भी प्राचीन भारतीय ज्ञान बेहद प्रासंगिक व शोधयोग्य है |[9] इस प्रकार आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में नई-नई पद्धतियों व अन्वेषणों को आयुर्वेद में शामिल किया जाना चाहिए | एम.आर.आई. , सीटी स्कैन आदि पद्धतियों से रोग का पता लगा आयुर्वेद द्वारा उसका उपचार हो |

शिक्षा- हमे पुनः प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति को जाग्रत करने की आवश्यकता है जो 'सा **विद्या या विमुक्तये'** के सिद्धांत पर आधारित थी जबकि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था केवल **'सा विद्या या नियुक्तये'** सिद्धांत पर आधारित हो चली है | वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पूर्णतः व्यावसायिक सिद्धांतों पर आधारित हो चली है , कृत्रिमता ही चहुँ और परिलक्षित होती है | हमे प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली, नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में प्रचलित शिक्षा प्रणालियों का शोध करना होगा | एक बात स्पष्ट है कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली को वर्तमान समय में यथावत् लागू नहीं किया जा सकता , किन्तु यह शोध का एक अत्यंत उपयोगी विषय हो सकता है कि प्राचीन सिद्धांतों को अपनाकर किस प्रकार शिक्षा को ज्ञानोन्मुख, मूल्यवान व रोजगारोन्मुख बनाया जा सके।

वास्तविक अर्थों का ज्ञान – हमारी प्राचीन परंपरा में इस विषय के शोध की विशेष आवश्यकता है कि वेद, पुराणों, उपनिषदों, महाकाव्यों आदि में कई तथ्यों को रुचिकर बनाने व समझाने के दृष्टिकोण से सांकेतिक रूप में कहा गया है, किन्तु हम उसका सीधा

अभिधाजनित अर्थ ग्रहण करके अर्थ का अनर्थ कर दते हैं |यथा – रावण के लिए दशानन , देवताओं आदि के लिए सहस्राक्ष आदि का विशिष्ट अभिप्राय है | संभव है कि चार वेदों व छः वेदांगों का ज्ञाता होने से रावण को 'दशानन' कहा गया हो | राजा गुप्तचर रुपी अक्षों से चारों ओर दृष्टि रखता था, अतः उसे 'सहस्राक्ष' कहा गया हो | **इसी प्रकार अन्य अर्थ ग्रहण करके यज्ञ में पशुबलि को बढ़ावा दिया गया , यथा –'अज' का अर्थ पुराना चावल भी है तथा बकरा भी | इसी प्रकार 'छाग' बकरी व बकरी के दूध को कहते हैं | यह बात मोटी बुद्धि से भी समझी जा सकती है कि जब यज्ञ का उद्देश्य वातावरण को शुद्ध करना तथा जनकल्याण है , तब उसमे पशुमांस की दुर्गंधयुक्त आहुतियाँ कैसे दी जा सकती है ?**[10] मीमांसा दर्शन में स्पष्ट रूप से यज्ञ में मांस का निषेध किया गया है | 'मांस-पाकप्रतिषेधश्च' यदि कहीं पशुओं के नाम का उल्लेख हुआ है , तो वह उन पशुओं के दान करने के सन्दर्भ में , न कि उन्हें काटकर बलि देने के सन्दर्भ में , क्योंकि यज्ञ हिंसा रहित कर्म (अध्वर) है | उसमे हिंसा नहीं हो सकती | इस प्रकार 'बलि' जिसका अर्थ दान, उपहार, भेंट आदि थे , मांसभक्षियों ने स्वार्थ के लिए उसका 'पशुबलि' अर्थ कर दिया |

भारतीय ज्ञान का वैज्ञानिक दृष्टि से शोध – आज यह महती आवश्यकता का विषय है कि हमारी समस्त प्राचीन परम्पराएं यथा- तिलक लगाना, कर्णवेध, मुंडन, समस्त संस्कार, गंगा में अस्थि विसर्जन, श्मशान के पश्चात स्नान, आरती करना, घंटी बजाना, यज्ञाग्नि प्रज्वलित करना, शिखा रखना, चरणस्पर्श करना आदि के पीछे बड़ी बड़ी वैज्ञानिक मान्यताएं हैं , उनका शोध तथा कृत शोध को आगे बढा युवा व बालपीढ़ी के समक्ष लाये जाने की आवश्यकता है |

योग – हम योग का प्रायः संकुचित अर्थ ग्रहण करते हैं , किन्तु योग एक बहुआयामी शब्द है | इस योग ने हमे वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई है | 21 जून को सम्पूर्ण विश्व में 'योग दिवस' मनाया जाता है | **'युज्यते अनेन इति योगः'** अर्थात् जिसके द्वारा जोड़ा जाए वह योग है | आचार्य पतंजलि ने इसका शास्त्रीय अर्थ **'योगश्चित्तवृतिनिरोध'**[11] बताया तो श्रीकृष्ण ने 'कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग' के बारे में बताकर सम्पूर्ण मानवजीवन के उद्देश्य को ही तीन योगों में बाँट दिया | इस प्रकार योग व्यक्ति को ब्रह्मांड से , आत्मा को परमात्मा से व साधक को साध्य से जोड़ने का साधन है | इसके अतिरिक्त मन्त्रयोग, लययोग, हठयोग तथा राजयोग भी योग की ही विधाएं है , जिनमे एक-एक पर विस्तृत शोधकार्य संभव है | योगी के लिए शरीरस्थ 9 चक्र, 11 आधारों , 3 लक्ष्यों , 5 आकाशों का ज्ञान आवश्यक है |

नवचक्रं कलाधारम त्रिलक्ष्यं व्योमापंचकम I

सम्येगतन्न जानाति सा योगी नामधारक:II[12]

उपनिषद् व पुराण – उपनिषद् ज्ञान की अमूल्य निधि है | उपनिषदों में प्रतिपादित सृष्टि उत्पति सिद्धांत , तैत्तिरीय उपनिषद् का पंचकोश सिद्धांत , विभिन्न संवाद , आत्मा की जाग्रत , सुषुप्ति , स्वप्न व तुरीय अवस्थाएं , यत् पिंडे तत् ब्रह्मांडे का वैज्ञानिक सिद्धांत , स्थूल-सूक्ष्म कारण शरीर , कर्म सिद्धांत आदि पर जितना शोध किया जाए उतनी ही नवीन व वैज्ञानिक अवधारणाएं प्राप्त होती है | **भागवत पुराण के अनुसार- "जब संसार अन्धकार से उबरा तो जल में प्रारंभिक मूल प्रकृति से वनस्पति का बीज उत्पन्न हुआ , जिससे पौधों को जीवन मिला | पौधों से कीटाणु उत्पन्न हुए जो जीव अनुक्रम में कीड़े, सांप, कछुआ, पक्षी, पशु आदि अवस्थाओं से होते हुए मानव रूप प्राप्त किये | पौधों व जीवों की उत्पति का यह विशुद्ध वैदिक ज्ञान है |" ऋषि मनु के अनुसार , "सभी जीव अपनी पुरानी पीढ़ियों के जीवित रहने की क्षमता को अपनाकर आगे बढ़ते रहे |" सोलहवीं सदी के वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन ने इसे 'डार्विन विकासवाद' प्रणाली का नाम दिया |**[13]

ज्यामिति के कई महत्त्वपूर्ण नियमों की खोज बोधायन द्वारा करना , शून्य तथा दशमलव प्रणाली का जनक भारत होना , पिंगलाचार्य के छंद नियमों का एक तरह से द्विअंकीय (बाइनरी) गणित का कार्य करना , महर्षि भारद्वाज का विमान शास्त्र , वेदांग ज्योतिष में सूर्य ,चन्द्रमा नक्षत्र , सौर मंडल के ग्रह और ग्रहण के विषय में जानकारी , भास्कराचार्य द्वारा सिद्धांतशिरोमणि ग्रन्थ में गुरुत्वाकर्षण का उल्लेख करना , शताब्दियों पूर्व नौवहन की कला का जन्म होना , भगवान् राम द्वारा यमुना पार करने के लिए

नौका का प्रयोग करना , महर्षि कणाद द्वारा डॉल्टन से पूर्व परमाणुवाद के सिद्धांत का प्रतिपादन , वेदान्त दर्शन में पंचीकरण की प्रक्रिया द्वारा सृष्टि उत्पति का वैज्ञानिक विवेचन , अगस्त्य संहिता में आश्चर्यजनक रूप से विद्युत् उत्पादन सम्बन्धी सूत्रों का मिलना तथा करोडों पांडूलिपियाँ आज भी शोध का इंतज़ार कर रही है ताकि भारतीय ज्ञान विज्ञान की परंपरा को उसका यथोचित स्थान मिल सके | पांडुलिपियों सहित समस्त प्राचीन ज्ञान के समुचित डिजिटलाईजेशन की आवश्यकता है ताकि हमारे ज्ञान का संरक्षण तथा प्रचार समुचित रूप से हो सके |

इसके अतिरिक्त प्राचीन वास्तुशास्त्र , प्राचीन कृषि विषयक ग्रंथ जैसे – कृषि पाराशर , वृक्षायुर्वेद का भी वर्तमान आवश्यकताओं के अनुकूल शोधकार्य किया जाना चाहिए | सार रूप में कहा जाए तो याकोबी,विंटरनिट्स,मैक्समूलर,विलियम जोन्स,मोनियर विलियम्स,अलेक्जेंडर कनिंघम ,ह्वेनसांग आदि विदेशी विद्वानों ने भारतीय संस्कृति का अध्ययन किया तथा नासा जैसे संस्थान हमारे ग्रंथो व परम्पराओं का अध्ययन कर समृद्ध हो रहे है किंतु हमारी स्थिति उस कस्तूरी मृग के समान हो चली है जिसे स्वयं की सुगंध का ज्ञान नहीं है, अत: हमें सुप्तावस्था भंग कर पुनः विश्वगुरु पदवी प्राप्त करनी है तो हमारी ज्ञान परम्परा को पुनर्जीवित करना होगा I

सन्दर्भ – 1 रिसर्च मैथ्डोलॉजी (डॉ. आर.एन.त्रिवेदी , डॉ. डी.पी.शुक्ला) पृ.सं.- 24

2 वही , पृ.सं.- 62

3 मनुस्मृति 3/70

4 अथर्ववेद 12/1/12

5 https://www.punjabkesri.in (12 March 2020)

6 चरक सूत्र 3/41

7 सुश्रुत संहिता सूत्र स्थान 15/10

8 https://m.jagran.com (16.5.20)

9 https://www.newstodaynetwork.com

10 वैदिक ज्ञान विज्ञान कोश आधुनिक परिप्रेक्ष्य में (सम्पादक- डॉ.मनोदत्त पाठक) , पृ.सं.- 489

11 पतंजलि योगसूत्र 1.2

12 वैदिक ज्ञान विज्ञान कोश आधुनिक परिप्रेक्ष्य में , पृ.सं.- 553

13 वही पृ.सं.- 53